International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: RJIF 5.93
IJLE 2026; 6(1): 01-04
www.educationjournal.info
Received: 05-11-2025
Accepted: 11-12-2025

माया मिश्रा
शोध छात्रा शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पतंजलि मिश्र
प्राचार्य, श्याम आादर्श शिक्षा महाविद्यालय, पुरैना, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
माया मिश्रा
शोध छात्रा शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन

माया मिश्रा, डॉ. पतंजलि मिश्र

DOI: https://www.doi.org/10.22271/27891607.2026.v6.i1a.371

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के 2 शहरी – 2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 36 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 शिक्षक कुल 72 शिक्षक, 2–2 अभिभावक, कुल 72 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 1440 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अध्ययन हेतु किया गया है। शोध क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन मुख्यतः शासकीय मानकों के अनुरूप प्रतीत होता है। अभिमतदाताओं के विचार, सांख्यिकीय आंकड़ों और क्रियान्वयन की प्रक्रिया का मूल्यांकन करने पर कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा प्रभावी रूप से लागू हो रही है। अध्ययन क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में उल्लेखनीय अंतर देखा गया है। इस असाम्यता को ध्यान में रखते हुए नीति निर्माताओं और शैक्षणिक प्रबंधकों को इसे प्राथमिकता देते हुए आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने चाहिए, ताकि समावेशी शिक्षा का लाभ सभी क्षेत्रों तक समान रूप से पहुंचे।

कूट शब्द : रीवा जिला, माध्यमिक विद्यालय, समावेशी शिक्षा, क्रियान्व्यन

1. प्रस्तावना
शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है और समावेशी शिक्षा वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभर रही है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को समान अवसर प्रदान करना और उन्हें मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में समाहित करना है, ताकि वे भी समान रूप से शिक्षा ग्रहण कर सकें और समाज का सक्रिय अंग बन सकें।

समावेशी शिक्षा प्रत्येक बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह उन्हें सामान्य तरीके से शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करती है और उन्हें सामान्य बच्चों के समान बनने के लिए प्रेरित करती है। एक समावेशी वातावरण में हर बच्चा खुद को सुरक्षित महसूस करता है और उसमें अपनत्व व सहयोग की भावना विकसित होती है। इस शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ मानसिक उत्थान और प्रगति के अवसर प्रदान किए जाते हैं, जिससे हर बच्चा अपनी रुचि के अनुसार काम करने के लिए प्रोत्साहित होता है। दृष्टिहीन बच्चे भी खुद को अन्य बच्चों से अलग नहीं समझते और उनमें हीन भावना पैदा नहीं होती। इस प्रकार, समावेशी शिक्षा प्रणाली बच्चों के सामान्य मानसिक विकास में सहायक होती है।

समावेशी शिक्षा सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान करती है और भेदभाव रहित वातावरण में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों और सामान्य बच्चों को एक समान मंच पर शिक्षा उपलब्ध कराती है। यह पहल सामान्य छात्रों और विकलांग छात्रों दोनों को समान शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार देती है। समावेशी शिक्षा शिक्षा के अधिकार को साकार करने का एक सकारात्मक और अग्रणी प्रयास है। इसका प्रमुख उद्देश्य मानसिक, शारीरिक या भावनात्मक रूप से कमजोर सभी बच्चों को बिना किसी भेदभाव के समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है।

इस शोध पत्र के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण किया जाएगा। यह अध्ययन प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों की सोच, उनके समावेशी शिक्षा के प्रति झुकाव, इसे अपनाने में आने वाली चुनौतियों और इसे प्रभावी रूप से लागू करने के लिए आवश्यक संसाधनों को समझने पर केंद्रित होगा। इस शोध का उद्देश्य न केवल अभिमतदाताओं की मानसिकता को समझना है, बल्कि उन कारकों की पहचान करना भी है जो उनकी सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन के निष्कर्षों से शैक्षिक नीति निर्माताओं, प्रशासकों और प्रशिक्षण संस्थानों को अभिमतदाताओं के दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करने हेतु आवश्यक रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता मिलेगी। साथ ही, यह शोध क्षेत्र में विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के महत्व को समझाने और इसके सफल क्रियान्वयन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में लागू हो रही समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन की प्रक्रिया, उसके प्रभाव और उसकी संपूर्ण संरचना का गहन अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन की प्रक्रिया को आपस में तुलना करते हुए उनके बीच के अंतर और सामंजस्य की पहचान करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. "शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है।"
2. "शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार व प्रश्नावली पत्रक का उपयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के 2 शहरी – 2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 36 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 शिक्षक कुल 72 शिक्षक, 2–2 अभिभावक, कुल 72 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 1440 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कपिल, एच.के. (1996)[1], गुप्ता, एस.पी. (1997)[2], अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], कपूर, सुमिता एवं अग्रवाल, देवेन्द्र कुमार (2024)[5], त्रिवेदी, रोहित कुमार (2025)[6], गुप्ता, सुनील कुमार एवं मिश्र, पतंजलि (2023)[7] एवं शर्मा दिलीप कुमार (2020)[8]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप हो रहा है।"

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन शासकीय मानको के अनुरूप					
			हो रहा है		नही हो रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	36	28	77.78	08	22.22	00	00
2.	शिक्षक	72	50	69.44	10	13.89	12	16.67
3.	अभिभावक	72	44	61.11	12	16.67	16	22.22
4.	छात्र	1440	929	64.51	235	16.32	276	19.17
योग		1620	1051	64.88	265	16.36	304	18.77
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 726.74$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में न्यादर्श में चयनित सभी विकासखण्डों से 2 शहरी – 2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 36 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। चयनित विद्यालयों से प्राचार्य, 2–2 शिक्षक कुल 72 शिक्षक, 2–2 अभिभावक, कुल 72 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 1440 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृटियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा। इन विद्यार्थियों से शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन और उसके शासकीय मानकों की अनुकूलता से संबंधित जानकारी एकत्र की गई। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि समावेशी शिक्षा की व्यवस्था कितनी प्रभावी है और क्या यह निर्धारित मानकों के अनुरूप संचालित की जा रही है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 77.78 प्रतिशत प्राचार्य, 69.44 प्रतिशत शिक्षक, 61.11 प्रतिशत अभिभावक व 64.51 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन शासकीय मानकों के अनुकूल है।

न्यादर्श में चयनित 1620 अभिमतदाताओं में से 64.88 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन शासकीय मानकों के अनुकूल है, 16.36 प्रतिशत अभिमत है कि अनुकूल नहीं है, जबकि 18.77 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर नहीं है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 726. 74 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है अर्थात सार्थक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

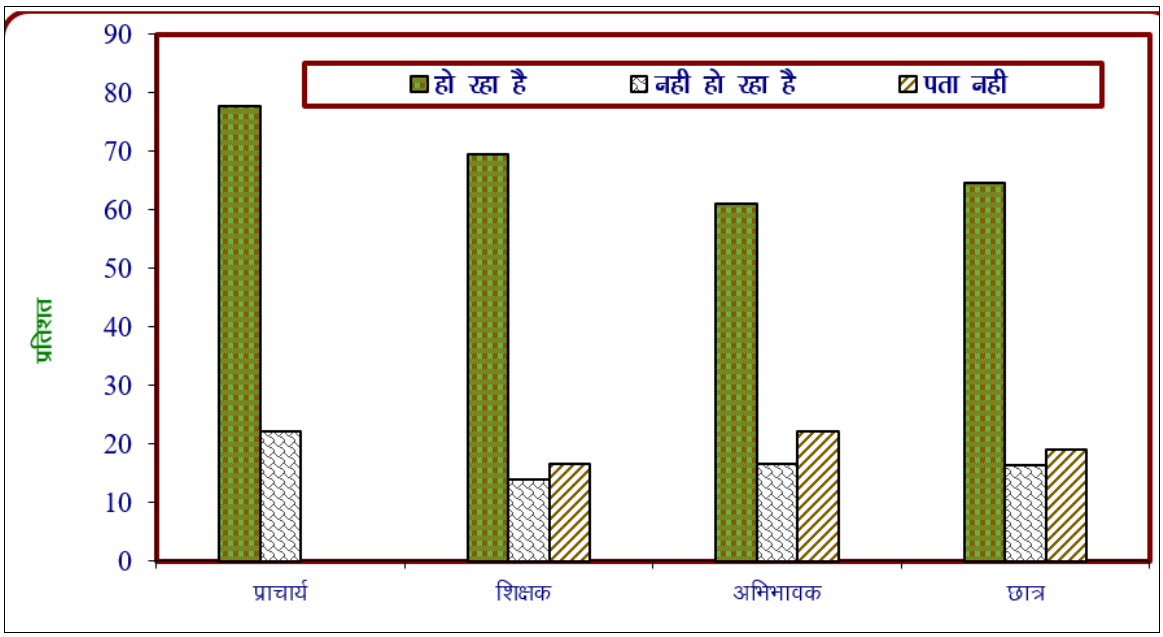

आरेख 1: माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन का आरेखीय निरूपणै

परिकल्पना 2 : "शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2 : शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी	ग्रामीण
समूह की संख्या (N)		18	18
मध्यमान (M)		66.11	50.00
मानक विचलन (SD)		16.63	15.00
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.05	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$
df = (18-1) + (18-1) = 17 + 17 = 34

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के श्शहरी व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में सार्थकता का औसत मध्यमान 66.11 है तथा मानक विचलन 16.63 है और ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन का औसत मध्यमान 50.00 है तथा मानक विचलन 15.00 है।

34 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.72 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 2.03 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.05 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः परिकल्पना क्र. 2 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

- शोध क्षेत्र के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालयों में संचालित समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन ज्यादातर शासकीय मानकों के अनुरूप हो रहा है। अभिमतदाताओं के विचार, सांख्यिकीय प्रमाण और क्रियान्वयन की प्रक्रिया को देखते हुए कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा का प्रभावी कार्यान्वयन हो रहा है, हालांकि कुछ क्षेत्रों में इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है।
- अध्ययन क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में संचालित समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। इस अंतर को दृष्टिगत रखते हुए, नीति निर्धारकों और शैक्षणिक प्रबंधकों को विशेष ध्यान देते हुए आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवना, इलाहाबाद.
3. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. कपूर, सुमिता एवं अग्रवाल, देवेन्द्र कुमार (2024) : समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). 12(9); 510-514.
6. त्रिवेदी, रोहित कुमार (2025): माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, National Journal of Multidisciplinary Research and Development, Volume 10, Issue 2, Page No. 46-49.
7. गुप्ता, सुनील कुमार एवं मिश्र, पतंजलि (2023): माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Literacy and Education; 3(1): 146-149.
8. शर्मा दिलीप कुमार (2020) : समावेशी शिक्षा में शिक्षकों के अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन जनरल ऑफ आर्ट ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस व ल्यूम 3.